

Ephesians

इफिसियों

1 Greetings from Paul, an apostle of Christ Jesus. I am an apostle because that is what God wanted.

To God's holy people living in Ephesus,* believers who belong to Christ Jesus.

² Grace and peace to you from God our Father and the Lord Jesus Christ.

Spiritual Blessings in Christ

³ Praise be to the God and Father of our Lord Jesus Christ. In Christ, God has given us every spiritual blessing in heaven. ⁴ In Christ, he chose us before the world was made. He chose us in love to be his holy people—people who could stand before him without any fault. ⁵ And before the world was made, God decided to make us his own children through Jesus Christ. This was what God wanted, and it pleased him to do it. ⁶ And this brings praise to God because of his wonderful grace. God gave that grace to us freely. He gave us that grace in Christ, the one he loves.

⁷ In Christ we are made free by his blood sacrifice. We have forgiveness of sins because of God's rich grace. ⁸ God gave us that grace fully and freely. With full wisdom and understanding ⁹ he let us know his secret plan. This was what God wanted, and he planned to do it through Christ. ¹⁰ God's goal was to finish his plan when the right time came. He planned that all things in heaven and on earth be joined together with Christ as the head.

¹¹ In Christ we were chosen to be God's people. God had already planned for us to be his people, because that is what he wanted. And he is the one who makes everything agree with what he decides and wants. ¹² We Jews were the first to hope in Christ. And we were chosen so

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का एक प्रेरित है, इफिसुस* के रहने वाले संत जनों और मसीह यीशु में विश्वास रखने वालों के नाम:

² तुम्हें हमारे परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह तथा शांति मिले।

मसीह में स्थितों के लिये आध्यात्मिक आशीर्ष

³ हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर धन्य हो। उसने हमें मसीह के रूप में स्वर्ग के क्षेत्र में हर तरह के आशीर्वाद दिये हैं। ⁴⁻⁵ संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र और निर्दोष बनने के लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था। ⁶ उसने ऐसा इसलिए किया कि वह अपनी महिमाय अनुग्रह के कारण स्वयं को प्रशंसित करे। उसने इसे हमें, जो उसके प्रिय पुत्र में स्थित हैं मुक्त भाव से प्रदान किया।

⁷ उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था। ⁸ उसने हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है। ⁹ जैसा कि मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था। ¹⁰ परमेश्वर की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र करें।

¹¹ सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के अनुसार की जाती हैं। और परमेश्वर ने अपने निजी प्रयोजन के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के लिये चुना है। यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर ने अनादिकाल से सुनिश्चित कर रखा था। ¹² ताकि हम उसकी महिमा की प्रशंसा के कारण बन सकें। हम, यानी जिन्होंने

1:1 in Ephesus Some Greek copies do not have the words "in Ephesus."

1:1 इफिसुस कुछ यूनानी प्रतियों में शब्द "इफिसुस" नहीं है।

that we would bring praise to God in all his glory. ¹³It is the same with you. You heard the true message, the Good News about the way God saves you. When you heard that Good News, you believed in Christ. And in Christ, God put his special mark on you by giving you the Holy Spirit that he promised. ¹⁴The Spirit is the first payment that guarantees we will get all that God has for us. Then we will enjoy complete freedom as people who belong to him. The goal for all of us is the praise of God in all his glory.

Paul's Prayer

¹⁵⁻¹⁶That is why I always remember you in my prayers and thank God for you. I have done this ever since I heard about your faith in the Lord Jesus and your love for all of God's people. ¹⁷I always pray to the great and glorious Father, the God of our Lord Jesus Christ. I pray that he will give you the Spirit, who will let you know truths about God and help you understand them, so that you will know him better.

¹⁸I pray that God will open your minds to see his truth. Then you will know the hope that he has chosen us to have. You will know that the blessings God has promised his holy people are rich and glorious. ¹⁹And you will know that God's power is very great for us who believe. It is the same as the mighty power ²⁰he used to raise Christ from death and put him at his right side in the heavenly places. ²¹He put Christ over all rulers, authorities, powers, and kings. He gave him authority over everything that has power in this world or in the next world. ²²God put everything under Christ's power and made him head over everything for the church. ²³The church is Christ's body. It is filled with him. He makes everything complete in every way.

From Death to Life

2 In the past you were spiritually dead because of your sins and the things you did against

अपनी सभी आशाएँ मसीह पर केन्द्रित कर दी हैं। ¹³जब तुमने उस सत्य का संदेश सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार था, और जिस मसीह पर तुमने विश्वास किया था, तो जिस पवित्र आत्मा का वचन दिया था, मसीह के माध्यम से उसकी छाप परमेश्वर के द्वारा तुम लोगों पर भी लगायी गयी। ¹⁴वह आत्मा हमारे उत्तराधिकार के भाग की जमानत के रूप में उस समय तक के लिये हमें दिया गया है, जब तक कि वह हमें, जो उसके अपने हैं, पूरी तरह छुटकारा नहीं दे देता। इसके कारण लोग उसकी महिमा की प्रशंसा करेंगे।

इफिसियों के लिये पौलस की प्रार्थना

¹⁵इसलिए जब से मैंने प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है, ¹⁶मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर कर रहा हूँ। अपनी प्रार्थनाओं में मैं तुम्हारा उल्लेख किया करता हूँ। ¹⁷मैं प्रार्थना किया करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर तुम्हें विवेक और दिव्यदर्शन की ऐसी आत्मा की शक्ति प्रदान करे जिससे तुम उस महिमावान परम पिता को जान सको।

¹⁸मेरी विनती है कि तुम्हारे हृदय की आँखें खुल जायें और तुम प्रकाश का दर्शन कर सको ताकि तुम्हें पता चल जाये कि वह आशा क्या है जिसके लिये तुम्हें उसने बुलाया है। और जिस उत्तराधिकार को वह अपने सभी लोगों को देगा, वह कितना अद्भुत और सम्पन्न है। ¹⁹तथा हम विश्वासियों के लिए उसकी शक्ति अतुलनीय रूप से कितनी महान है। यह शक्ति अपनी महान शक्ति के उस प्रयोग के समान है, ²⁰जिसे उसने मसीह में तब काम में लिया था जब मरे हुआओं में से उसे फिर से जिला कर स्वर्ग के क्षेत्र में अपनी दाहिनी ओर बिठाकर ²¹सभी शासकों, अधिकारियों, सामर्थ्यों और प्रभुताओं तथा हर किसी ऐसी शक्तिशाली पदवी के ऊपर स्थापित किया था, जिसे न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी किसी को दिया जा सकता है। ²²परमेश्वर ने सब कुछ को मसीह के चरणों के नीचे कर दिया और उसी ने मसीह को कलीसिया का सर्वोच्च शिरोमणि बनाया। ²³कलीसिया मसीह की देह है और सब विधियों से सब कुछ को उसकी पूर्णता ही परिपूर्ण करती है।

मृत्यु से जीवन की ओर

2 एक समय था जब तुम लोग उन अपराधों और पापों के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे

God. ²Yes, in the past your lives were full of those sins. You lived the way the world lives, following the ruler of the evil powers over the earth. That same spirit is now working in those who refuse to obey God. ³In the past all of us lived like that, trying to please our sinful selves. We did all the things our bodies and minds wanted. Like everyone else in the world, we deserved to suffer God's anger just because of the way we were.

⁴But God is rich in mercy, and he loved us very much. ⁵We were spiritually dead because of all we had done against him. But he gave us new life together with Christ. (You have been saved by God's grace.) ⁶Yes, it is because we are a part of Christ Jesus that God raised us from death and seated us together with him in the heavenly places. ⁷God did this so that his kindness to us who belong to Christ Jesus would clearly show for all time to come the amazing richness of his grace.

⁸I mean that you have been saved by grace because you believed. You did not save yourselves; it was a gift from God. ⁹You are not saved by the things you have done, so there is nothing to boast about. ¹⁰God has made us what we are. In Christ Jesus, God made us new people so that we would spend our lives doing the good things he had already planned for us to do.

One in Christ

¹¹You were not born as Jews. You are the people the Jews call "uncircumcised." Those Jews who call you "uncircumcised" call themselves "circumcised." (Their circumcision is only something they themselves do to their bodies.) ¹²Remember that in the past you were without Christ. You were not citizens of Israel, and you did not know about the agreements with the promises that God made to his people. You had no hope, and you did not know God. ¹³Yes, at one time you were far away from God, but now in Christ Jesus, you are brought near to him. You are brought near to God through the blood sacrifice of Christ.

हुए थे ²जिनमें तुम पहले, संसार के बुरे रास्तों पर चलते हुए और उस आत्मा का अनुसरण करते हुए जीते थे जो इस धरती के ऊपर की आत्मिक शक्तियों का स्वामी है। वही आत्मा अब उन व्यक्तियों में काम कर रही है जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। ³एक समय हम भी उन्हीं के बीच जीते थे और अपनी पापपूर्ण प्रकृति की भौतिक इच्छाओं को तृप्त करते हुए अपने हृदयों और पापपूर्ण प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए संसार के दूसरे लोगों के समान परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे।

⁴किन्तु परमेश्वर करुणा का धनी है। हमारे प्रति अपने महान् प्रेम के कारण ⁵उस समय अपराधों के कारण हम आध्यात्मिक रूप से अभी मरे ही हुए थे, मसीह के साथ साथ उसने हमें भी जीवन दिया (परमेश्वर के अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है।) ⁶और क्योंकि हम यीशु मसीह में हैं इसलिए परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ ही फिर से जी उठाया और उसके साथ ही स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया। ⁷ताकि वह आने वाले हर युग में अपने अनुग्रह के अनुपम धन को दिखाये जिसे उसने मसीह यीशु में अपनी दया के रूप में हम पर दर्शाया है।

⁸परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें तुम्हारी ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का वरदान है। ⁹यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है कि हम इसका गर्व कर सकें। ¹⁰क्योंकि परमेश्वर हमारा सृजनहार है। उसने मसीह यीशु में हमारी सृष्टि इसलिए की है कि हम नेक काम करें जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही इसलिए तैयार किया हुआ है कि हम उन्हीं को करते हुए अपना जीवन बितायें।

मसीह में एक

¹¹इसलिए याद रखो, वे लोग, जो अपने शरीर में मानव हाथों द्वारा किये गये खतने के कारण अपने आपको "खतना युक्त" बताते हैं, विधर्मी के रूप में जन्मे तुम लोगों को "खतना रहित" कहते थे। ¹²उस समय तुम बिना मसीह के थे, तुम इस्त्राएल की बिरादरी से बाहर थे। परमेश्वर ने अपने भक्तों को जो वचन दिए थे उन पर आधारित वाचा से अनजाने थे। तथा इस संसार में बिना परमेश्वर के निराश जीवन जीते थे। ¹³किन्तु अब तुम्हें, जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के बलिदान के द्वारा मसीह यीशु में तुम्हारी स्थिति के कारण, परमेश्वर के निकट ले आया गया है।

¹⁴Christ is the reason we are now at peace. He made us Jews and you who are not Jews one people. We were separated by a wall of hate that stood between us, but Christ broke down that wall. By giving his own body, ¹⁵Christ ended the law with its many commands and rules. His purpose was to make the two groups become one in him. By doing this he would make peace. ¹⁶Through the cross Christ ended the hate between the two groups. And after they became one body, he wanted to bring them both back to God. He did this with his death on the cross. ¹⁷Christ came and brought the message of peace to you non-Jews who were far away from God. And he brought that message of peace to those who were near to God. ¹⁸Yes, through Christ we all have the right to come to the Father in one Spirit.

¹⁹So now you non-Jewish people are not visitors or strangers, but you are citizens together with God's holy people. You belong to God's family. ²⁰You believers are like a building that God owns. That building was built on the foundation that the apostles and prophets prepared. Christ Jesus himself is the most important stone in that building. ²¹The whole building is joined together in Christ, and he makes it grow and become a holy temple in the Lord. ²²And in Christ you are being built together with his other people. You are being made into a place where God lives through the Spirit.

Paul's Work for the Non-Jewish People

3 So I, Paul, am a prisoner because I serve Christ Jesus for you who are not Jews. ²Surely you know that God gave me this work through his grace to help you. ³God let me know his secret plan by showing it to me. I have already written a little about this. ⁴And if you read what I wrote, you can see that I understand the secret truth about Christ. ⁵People who lived in other times were not told that secret truth. But now, through the Spirit, God has made it known to his holy apostles and prophets. ⁶And this is the secret

¹⁴यहूदी और गैर यहूदी आपस में एक दूसरे से नफ़रत करते थे और अलग हो गये थे। ठीक ऐसे जैसे उन के बीच कोई दीवार खड़ी हो। किन्तु मसीह ने स्वयं अपनी देह का बलिदान देकर नफ़रत की उस दीवार को गिरा दिया। ¹⁵उसने ऐसा तब किया जब अपने समूचे नियमों और व्यवस्थाओं के विधान को समाप्त कर दिया। उसने ऐसा इसलिए किया कि वह अपने में इन दोनों को ही एक में मिला सकें। और इस प्रकार मिलाप करा दे। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उसने उस घृणा का अंत कर दिया। और उन दोनों को परमेश्वर के साथ उस एक देह में मिला दिया। ¹⁶और क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा वैर भाव का नाश करके एक ही देह में उन दोनों को संयुक्त करके परमेश्वर से फिर मिला दे। ¹⁷सो आकर उसने तुम्हें, जो परमेश्वर से बहुत दूर थे और जो उसके निकट थे, उन्हें शांति का सुसमाचार सुनाया। ¹⁸क्योंकि उसी के द्वारा एक ही आत्मा से परम पिता के पास तक हम दोनों की पहुँच हुई।

¹⁹परिणामस्वरूप अब तुम न अनजान रहे और न ही पराये। बल्कि अब तो तुम संत जनों के स्वदेशी संगी-साथी हो गये हो। ²⁰तुम एक ऐसा भवन हो जो प्रेरितों और नबियों की नींव पर खड़ा है। तथा स्वयं मसीह यीशु जिसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कोने का पत्थर है। ²¹⁻²²मसीह में स्थित एक ऐसे स्थान की रचना के रूप में, जहाँ आत्मा के द्वारा स्वयं परमेश्वर निवास करता है, दूसरे लोगों के साथ तुम्हारा भी निर्माण किया जा रहा है।

गैर यहूदियों में पौलुस का प्रचार-कार्य

3 इसीलिए मैं, पौलुस तुम गैर यहूदियों के लिये मसीह यीशु के हेतु बन्दी बना हूँ। ²तुम्हारे कल्याण के लिए परमेश्वर ने अनुग्रह के साथ जो काम मुझे सौंपा है, उसके बारे में तुमने अवश्य ही सुना होगा। ³कि वह रहस्यमयी योजना दिव्यदर्शन द्वारा मुझे जनाई गयी थी, जैसा कि मैं तुम्हें संक्षेप में लिख ही चुका हूँ। ⁴और यदि तुम उसे पढ़ोगे तो मसीह विषयक रहस्यपूर्ण सत्य में मेरी अन्तर्दृष्टि की समझ तुम्हें हो जायेगी। ⁵यह रहस्य पिछली पीढ़ी के लोगों को वैसे नहीं जनाया गया था जैसे अब उसके अपने पवित्र प्रेरितों और नबियों को आत्मा के द्वारा जनाया जा चुका है। ⁶यह रहस्य है

truth: that by hearing the Good News, those who are not Jews will share with the Jews in the blessings God has for his people. They are part of the same body, and they share in the promise God made through Christ Jesus.

⁷By God's special gift of grace, I became a servant to tell that Good News. He gave me that grace by using his power. ⁸I am the least important of all God's people. But he gave me this gift—to tell the non-Jewish people the Good News about the riches Christ has. These riches are too great to understand fully. ⁹And God gave me the work of telling all people about the plan for his secret truth. That secret truth has been hidden in him since the beginning of time. He is the one who created everything. ¹⁰His purpose was that all the rulers and powers in the heavenly places will now know the many different ways he shows his wisdom. They will know this because of the church. ¹¹This agrees with the plan God had since the beginning of time. He did what he planned, and he did it through Christ Jesus our Lord. ¹²In Christ we come before God with freedom and without fear. We can do this because of our faith in Christ. ¹³So I ask you not to be discouraged because of what is happening to me. My sufferings are for your benefit—for your honor and glory.

The Love of Christ

¹⁴So I bow in prayer before the Father. ¹⁵Every family in heaven and on earth gets its true name from him. ¹⁶I ask the Father with his great glory to give you the power to be strong in your spirits. He will give you that strength through his Spirit. ¹⁷I pray that Christ will live in your hearts because of your faith. I pray that your life will be strong in love and be built on love. ¹⁸And I pray that you and all God's holy people will have the power to understand the greatness of Christ's love—how wide, how long, how high, and how deep that love is. ¹⁹Christ's love is greater than anyone can ever know, but I pray that you will be able to know that love. Then you can be filled with everything God has for you.

²⁰With God's power working in us, he can do

कि यहूदियों के साथ ग़ैर यहूदी भी सह उत्तराधिकारी है, एक ही देह के अंग है और मसीह यीशु में जो वचन हमें दिया गया है, उसमें सहभागी है।

⁷सुसमाचार के कारण मैं उस सुसमाचार का प्रचार करने वाला एक सेवक बन गया, जो उसकी शक्ति के अनुसार परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान स्वरूप मुझे दिया गया था। ⁸यद्यपि सभी संत जनों में मैं छोटे से भी छोटा हूँ किन्तु मसीह के अनन्त धन रूपी सुसमाचार का ग़ैर यहूदियों में प्रचार करने का यह अनुग्रह मुझे दिया गया ⁹कि मैं सभी लोगों के लिए उस रहस्यपूर्ण योजना को स्पष्ट करूँ जो सब कुछ के सिरजनहार परमेश्वर में सृष्टि के प्रारम्भ से ही छिपी हुई थी। ¹⁰ताकि वह स्वर्गिक क्षेत्र की शक्तियों और प्रशासकों को अब उस परमेश्वर के बहुविध ज्ञान को कलीसिया के द्वारा प्रकट कर सके। ¹¹यह उस सनातन प्रयोजन के अनुसार सम्पन्न हुआ जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूरा किया था। ¹²मसीह में विश्वास के कारण हम परमेश्वर तक भरोसे और निर्भोक्ता के साथ पहुँच रखते हैं। ¹³इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे लिए मैं जो यातनाएँ भोग रहा हूँ, उन से आशा मत छोड़ बैठना क्योंकि इस यातना में ही तो तुम्हारी महिमा है।

मसीह का प्रेम

¹⁴इसलिए मैं परम पिता के आगे झुकता हूँ। ¹⁵उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं। ¹⁶मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को शक्तिपूर्वक सुदृढ़ करे। ¹⁷और विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में मसीह का निवास हो। तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें। ¹⁸जिससे तुम्हें अन्य सभी संत जनों के साथ यह समझने की शक्ति मिल जाये कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, विस्तृत, विशाल और गम्भीर है। ¹⁹और तुम मसीह के उस प्रेम को जान लो जो सभी प्रकार के ज्ञानों से परे है ताकि तुम परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से भर जाओ।

²⁰अब उस परमेश्वर के लिये जो अपनी उस शक्ति से जो हममें काम कर रही है, जितना हम

much, much more than anything we can ask or think of. ²¹To him be glory in the church and in Christ Jesus for all time, forever and ever. Amen.

The Unity of the Body

4 So, as a prisoner for the Lord, I beg you to live the way God's people should live, because he chose you to be his. ²Always be humble and gentle. Be patient and accept each other with love. ³You are joined together with peace through the Spirit. Do all you can to continue as you are, letting peace hold you together. ⁴There is one body and one Spirit, and God chose you to have one hope. ⁵There is one Lord, one faith, and one baptism. ⁶There is one God and Father of us all, who rules over everyone. He works through all of us and in all of us.

⁷Christ gave each one of us a special gift. Everyone received what he wanted to give them.

⁸That is why the Scriptures say,

“He went up high into the sky;
he took prisoners with him,
and he gave gifts to people.”

Psalms 68:18

⁹When it says, “He went up,” what does it mean? It means that he first came down low to earth. ¹⁰So Christ came down, and he is the same one who went up. He went up above the highest heaven in order to fill everything with himself. ¹¹And that same Christ gave these gifts to people: He made some to be apostles, some to be prophets, some to go and tell the Good News, and some to care for and teach God's people. ¹²Christ gave these gifts to prepare God's holy people for the work of serving, to make the body of Christ stronger. ¹³This work must continue until we are all joined together in what we believe and in what we know about the Son of God. Our goal is to become like a full-grown man—to look just like Christ and have all his perfection.

¹⁴Then we will no longer be like babies. We will not be people who are always changing like

मॉग सकते हैं या जहाँ तक हम सोच सकते हैं, उससे भी कहीं अधिक कर सकता है, ²¹उसकी कलीसिया में और मसीह यीशु में अनन्त पीढ़ियों तक सदा सदा के लिये महिमा होती रहे। आमीन।

एक देह

4 इसलिए मैं, जो प्रभु का होने के कारण बंदी बना हुआ हूँ, तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें अपना जीवन वैसे ही जीना चाहिए जैसा कि संतों के अनुकूल होता है। ²सदा नम्रता और कोमलता के साथ, धैर्यपूर्वक आचरण करो। एक दूसरे की प्रेम से सहते रहो। ³वह शांति, जो तुम्हें आपस में बाँधती है, उससे उत्पन्न आत्मा की एकता को बनाये रखने के लिये हर प्रकार का यत्न करते रहो। ⁴देह एक है और पवित्र आत्मा भी एक ही है। ऐसे ही जब तुम्हें भी बुलाया गया तो एक ही आशा में भागीदार होने के लिये ही बुलाया गया। ⁵एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है और है एक ही बपतिस्मा। ⁶परमेश्वर एक ही है और वह सबका पिता है। वही सब का स्वामी है, हर किसी के द्वारा वही क्रियाशील है, और हर किसी में वही समाया है।

⁷हममें से हर किसी को उसके अनुग्रह का एक विशेष उपहार दिया गया है जो मसीह की उदारता के अनुकूल ही है। ⁸इसलिए शास्त्र कहता है:

“उसने विजयी को ऊँचे चढ़,
बंदी बनाया और उसने लोगों को
अपने आनन्दी वर दिये।”

भजन संहिता 68:18

⁹अब देखो, जब वह कहता है, “ऊँचे चढ़” तो इसका अर्थ इसके अतिरिक्त क्या है? कि वह धरती के निचले भागों पर भी उतरा था। ¹⁰जो नीचे उतरा था, वह वही है जो ऊँचे भी चढ़ा था इतना ऊँचा कि सभी आकाशों से भी ऊपर, ताकि वह सब कुछ को सम्पूर्ण कर दे। ¹¹उसने स्वयं ही कुछ को प्रेरित होने का वरदान दिया तो कुछ को नबी होने का तो कुछ को सुसमाचार के प्रचारक होने का तो कुछ को परमेश्वर के जनों की सुरक्षा और शिक्षा का। ¹²मसीह ने उन्हें ये वरदान संत जनों की सेवा कार्य के हेतु तैयार करने को दिये ताकि हम जो मसीह की देह हैं, आत्मा में और दृढ़ हों। ¹³जब तक कि हम सभी विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एकाकार होकर परिपक्व पुरुष बनने के लिए विकास करते हुए मसीह के सम्पूर्ण गौरव की ऊँचाई को न छू लें।

¹⁴ताकि हम ऐसे बच्चे ही न बने रहें जो हर

a ship that the waves carry one way and then another. We will not be influenced by every new teaching we hear from people who are trying to deceive us—those who make clever plans and use every kind of trick to fool others into following the wrong way. ¹⁵No, we will speak the truth with love. We will grow to be like Christ in every way. He is the head, ¹⁶and the whole body depends on him. All the parts of the body are joined and held together, with each part doing its own work. This causes the whole body to grow and to be stronger in love.

The Way You Should Live

¹⁷I have something from the Lord to tell you. I warn you: Don't continue living like those who don't believe. Their thoughts are worth nothing. ¹⁸They have no understanding, and they know nothing because they refuse to listen. So they cannot have the life that God gives. ¹⁹They have lost their feeling of shame and use their lives to do what is morally wrong. More and more they want to do all kinds of evil. ²⁰But that way of life is nothing like what you learned when you came to know Christ. ²¹I know that you heard about him, and in him you were taught the truth. Yes, the truth is in Jesus. ²²You were taught to leave your old self. This means that you must stop living the evil way you lived before. That old self gets worse and worse, because people are fooled by the evil they want to do. ²³You must be made new in your hearts and in your thinking. ²⁴Be that new person who was made to be like God, truly good and pleasing to him.

²⁵So you must stop telling lies. "You must always speak the truth to each other," because we all belong to each other in the same body. ²⁶"When you are angry, don't let that anger make you sin," and don't stay angry all day. ²⁷Don't give the devil a way to defeat you. ²⁸Whoever has been stealing must stop it and start working. They must use their hands for doing something good. Then they will have something to share with those who are poor.

किसी ऐसी नयी शिक्षा की हवा से उछले जायें, जो हमारे रास्ते में बहती है, लोगों के छलपूर्ण व्यवहार से, ऐसी धूर्तता से, जो ठगी से भरी योजनाओं को प्रेरित करती है, इधर-उधर भटका दिये जाते हैं। ¹⁵बल्कि हम प्रेम के साथ सत्य बोलते हुए हर प्रकार से मसीह के जैसे बनने के लिये विकास करते जायें। मसीह सिर है, ¹⁶जिस पर समूची देह निर्भर करती है। यह देह उससे जुड़ती हुई प्रत्येक सहायक नस से संयुक्त होती है और जब इसका हर अंग जो काम उसे करना चाहिए, उसे पूरा करता है तो प्रेम के साथ समूची देह का विकास होता है और यह देह स्वयं सुदृढ़ होती है।

ऐसे जीओ

¹⁷मैं इसीलिए यह कहता हूँ और प्रभु को साक्षी करके तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि उनके व्यर्थ के विचारों के साथ अधर्मियों के जैसा जीवन मत जीते रहो। ¹⁸उनकी बुद्धि अंधकार से भरी है। वे परमेश्वर से मिलने वाले जीवन से दूर हैं। क्योंकि वे अबोध हैं और उनके मन जड़ हो गये हैं। ¹⁹लज्जा की भावना उनमें से जाती रही है। और उन्होंने अपने को इन्द्रिय उपासना में लगा दिया है। बिना कोई बन्धन माने वे हर प्रकार की अपवित्रता में जुटे हैं। ²⁰किन्तु मसीह के विषय में तुमने जो जाना है, वह तो ऐसा नहीं है। ²¹मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुमने उसके विषय में सुना है; और वह सत्य जो यीशु में निवास करता है, उसके अनुसार तुम्हें उसके शिष्यों के रूप में शिक्षित भी किया गया है। ²²जहाँ तक तुम्हारे पुराने जीवन प्रकार का संबन्ध है तुम्हें शिक्षा दी गयी थी कि तुम अपने पुराने व्यक्तित्व को उतार फेंको जो उसकी भटकाने वाली इच्छाओं के कारण भ्रष्ट बना हुआ है। ²³जिससे बुद्धि और आत्मा में तुम्हें नया किया जा सके। ²⁴और तुम उस नये स्वरूप को धारण कर सको जो परमेश्वर के अनुरूप सचमुच धार्मिक और पवित्र बनने के लिए रचा गया है।

²⁵सो तुम लोग झूठ बोलने का त्याग कर दो। अपने साथियों से हर किसी को सब बोलना चाहिए, क्योंकि हम सभी एक शरीर के ही अंग हैं। ²⁶क्रोध में आकर पाप मत कर बैठो। सूरज ढलने से पहले ही अपने क्रोध को समाप्त कर दो। ²⁷शैतान को अपने पर हावी मत होने दो। ²⁸जो चोरी करता आ रहा है, वह आगे चोरी न करे। बल्कि उसे काम करना चाहिए, स्वयं अपने हाथों से कोई उपयोगी काम। ताकि उसके पास, जिसे आवश्यकता है, उसके साथ बाँटने को कुछ हो सके।

²⁹When you talk, don't say anything bad. But say the good things that people need—whatever will help them grow stronger. Then what you say will be a blessing to those who hear you. ³⁰And don't make the Holy Spirit sad. God gave you his Spirit as proof that you belong to him and that he will keep you safe until the day he makes you free. ³¹Never be bitter, angry, or mad. Never shout angrily or say things to hurt others. Never do anything evil. ³²Be kind and loving to each other. Forgive each other the same as God forgave you through Christ.

5 You are God's dear children, so try to be like him. ²Live a life of love. Love others just as Christ loved us. He gave himself for us—a sweet-smelling offering and sacrifice to God.

³But there must be no sexual sin among you. There must not be any kind of evil or selfishly wanting more and more, because such things are not right for God's holy people. ⁴Also, there must be no evil talk among you. Don't say things that are foolish or filthy. These are not for you. But you should be giving thanks to God. ⁵You can be sure of this: No one will have a place in the kingdom of Christ and of God if that person commits sexual sins, or does evil things, or is a person who selfishly wants more and more. A greedy person like that is serving a false god.

⁶Don't let anyone fool you with words that are not true. God gets very angry when people who don't obey him talk like that. ⁷So don't have anything to do with them. ⁸In the past you were full of darkness, but now you are full of light in the Lord. So live like children who belong to the light. ⁹This light produces every kind of goodness, right living, and truth. ¹⁰Try to learn what pleases the Lord. ¹¹Have no part in the things that people in darkness do, which produce nothing good. Instead, tell everyone how wrong those things are. ¹²It is really very shameful to even talk about the things those people do in secret. ¹³But the light makes clear how wrong those things are. ¹⁴Yes, everything is made clear by the light. This is why we say,

²⁹तुम्हारे मुख से कोई अनुचित शब्द नहीं निकलना चाहिए, बल्कि लोगों के विकास के लिए जिसकी अपेक्षा है, ऐसी उत्तम बात ही निकलनी चाहिए, ताकि जो सुनें उनका उससे भला हो। ³⁰परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुःखी मत करते रहो क्योंकि परमेश्वर की सम्पत्ति के रूप में तुम पर छुटकारे के दिन के लिए आत्मा के साथ मुहर लगा दिया गया है। ³¹समूची कड़वाहट, झुंझलाहट, क्रोध, चीख-चिल्लाहट और निन्दा को तुम अपने भीतर से हर तरह की बुराई के साथ निकाल बाहर फेंको। ³²परस्पर एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणावान बनो। तथा आपस में एक दूसरे के अपराधों को वैसे ही क्षमा करो जैसे मसीह के द्वारा तुम को परमेश्वर ने भी क्षमा किया है।

5 प्यारे बच्चों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो। ²प्रेम के साथ जीओ। ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया है और अपने आप को मधुर-गंध-भेंट के रूप में, हमारे लिए परमेश्वर को अर्पित कर दिया है।

³तुम्हारे बीच व्यभिचार और हर किसी तरह की अपवित्रता अथवा लालच की चर्चा तक नहीं चलनी चाहिए। जैसा कि संत जनों के लिए उचित ही है। ⁴तुममें न तो अश्लील भाषा का प्रयोग होना चाहिए, न मूर्खतापूर्ण बातें या भद्दा हँसी ठट्ठा। ये तुम्हारी अनुकूल नहीं हैं। बल्कि तुम्हारे बीच धन्यवाद ही दिये जायें। ⁵क्योंकि तुम निश्चय के साथ यह जानते हो कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो दुराचारी है, अपवित्र है अथवा लालची है, जो एक मूर्ति पूजक होने जैसा है। मसीह के और परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पा सकता।

⁶देखो, तुम्हें कोरे शब्दों से कोई छल न ले। क्योंकि इन बातों के कारण ही आज्ञा का उल्लंघन करने वालों पर परमेश्वर का कोप होने को है। ⁷इसलिए उनके साथी मत बनो। ⁸यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि एक समय था जब तुम अंधकार से भरे थे किन्तु अब तुम प्रभु के अनुयायी के रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो। इसलिए प्रकाश पुत्रों का सा आचरण करो। ⁹हर प्रकार के धार्मिकता, नेकी और सत्य में ज्योति का प्रतिफलन दिखायी देता है। ¹⁰हर समय यह जानने का जतन करते रहो कि परमेश्वर को क्या भाता है। ¹¹ऐसे काम जो अंधकारपूर्ण हैं, उन बेकार के कामों में हिस्सा मत बटाओ बल्कि उनका भाँडा-फोड़ करो। ¹²क्योंकि ऐसे काम जिन्हें वे गुपचुप करते हैं, उनके बारे में की गयी चर्चा तक लज्जा की बात है। ¹³ज्योति जब प्रकाशित होती है तो सब कुछ दृश्यमान हो जाता है ¹⁴और जो कुछ दृश्यमान हो जाता है, वह स्वयं ज्योति ही बन जाता है। इसीलिए हमारा भजन कहता है:

“Wake up, you who are sleeping!
Rise from death,
and Christ will shine on you.”

“अरे जाग, हे सोने वाले !
मृतकों में से जी उठ बैठ,
तेरे ही सिर स्वयं मसीह प्रकाशित होगा।”

¹⁵So be very careful how you live. Live wisely, not like fools. ¹⁶I mean that you should use every opportunity you have for doing good, because these are evil times. ¹⁷So don't be foolish with your lives, but learn what the Lord wants you to do. ¹⁸Don't be drunk with wine, which will ruin your life, but be filled with the Spirit. ¹⁹Encourage each other with psalms, hymns, and spiritual songs. Sing and make music in your hearts to the Lord. ²⁰Always give thanks to God the Father for everything in the name of our Lord Jesus Christ.

Wives and Husbands

²¹Be willing to serve each other out of respect for Christ.

²²Wives, be willing to serve your husbands the same as the Lord. ²³A husband is the head of his wife, just as Christ is the head of the church. Christ is the Savior of the church, which is his body. ²⁴The church serves under Christ, so it is the same with you wives. You should be willing to serve your husbands in everything.

²⁵Husbands, love your wives the same as Christ loved the church and gave his life for it. ²⁶He died to make the church holy. He used the telling of the Good News to make the church clean by washing it with water. ²⁷Christ died so that he could give the church to himself like a bride in all her beauty. He died so that the church could be holy and without fault, with no evil or sin or any other thing wrong in it.

²⁸And husbands should love their wives like that. They should love their wives as they love their own bodies. The man who loves his wife loves himself, ²⁹because no one ever hates his own body, but feeds and takes care of it. And that is what Christ does for the church ³⁰because we are parts of his body. ³¹The Scriptures say, “That is why a man will leave his father and mother and join his wife, and the two

¹⁵इसलिए सावधानी के साथ देखते रहो कि तुम कैसा जीवन जी रहे हो। विवेकहीन का सा आचरण मत करो, बल्कि बुद्धिमान का सा आचरण करो। ¹⁶जो हर अवसर का अच्छे कर्म करने के लिये पूरा-पूरा उपयोग करते हैं, क्योंकि ये दिन बुरे हैं ¹⁷इसलिए मूर्ख मत बनो बल्कि यह जानो कि प्रभु की इच्छा क्या है। ¹⁸मदिरा पान करके मतवाले मत बने रहो क्योंकि इससे कामुकता पैदा होती है। इसके विपरीत आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ। ¹⁹आपस में भजनों, स्तुतियों और आध्यात्मिक गीतों का, परस्पर आदानप्रदान करते रहो। अपने मन में प्रभु के लिये गीत गाते उसकी स्तुति करते रहो। ²⁰हर किसी बात के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हमारे परम पिता परमेश्वर का सदा धन्यवाद करो।

पत्नी और पति

²¹मसीह के प्रति सम्मान के कारण एक दूसरे को समर्पित हो जाओ।

²²हे पत्नियों, अपने-अपने पतियों के प्रति ऐसे समर्पित रहो, जैसे तुम प्रभु को समर्पित होती हो। ²³क्योंकि अपनी पत्नी के ऊपर उसका पति ही प्रमुख है। वैसे ही जैसे हमारी कलीसिया का सिर मसीह है। वह स्वयं ही इस देह का उद्धार करता है। ²⁴जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को सब बातों में अपने अपने पतियों के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

²⁵हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो। वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिये बलि दे दिया। ²⁶ताकि वह उसे प्रभु की सेवा में जल में स्नान करा के पवित्र कर हमारी घोषणा के साथ परमेश्वर को अर्पित कर दे। ²⁷इस प्रकार वह कलीसिया को एक ऐसी चमचमाती दुल्हन के रूप में स्वयं के लिए प्रस्तुत कर सकता है जो निष्कलंक हो, झुरियों से रहित हो या जिसमें ऐसी और कोई कमी न हो। बल्कि वह पवित्र हो और सर्वथा निर्दोष हो।

²⁸पतियों को अपनी-अपनी पत्नियों से उसी प्रकार प्रेम करना चाहिए जैसे वे स्वयं अपनी देहों से करते हैं। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह स्वयं अपने आप से ही प्रेम करता है। ²⁹कोई अपनी देह से तो कभी घृणा नहीं करता, बल्कि वह उसे पालता-पोसता है और उसका ध्यान रखता है। वैसे ही जैसे मसीह अपनी कलीसिया का। ³⁰क्योंकि हम भी तो उसकी देह के अंग ही हैं। ³¹शास्त्र कहता है: “इसीलिए एक पुरुष

people will become one.”* ³² That secret truth is very important—I am talking about Christ and the church. ³³ But each one of you must love his wife as he loves himself. And a wife must respect her husband.

Children and Parents

6 Children, obey your parents the way the Lord wants, because this is the right thing to do. ² The command says, “You must respect your father and mother.”* This is the first command that has a promise with it. ³ And this is the promise: “Then all will go well with you, and you will have a long life on the earth.”*

⁴ Fathers, don’t make your children angry, but raise them with the kind of teaching and training you learn from the Lord.

Slaves and Masters

⁵ Slaves, obey your masters here on earth with fear and respect. And do this with a heart that is true, just as you obey Christ. ⁶ You must do this not just to please your masters while they are watching, but all the time. Since you are really slaves of Christ, you must do with all your heart what God wants. ⁷ Do your work, and be happy to do it. Work as though it is the Lord you are serving, not just an earthly master. ⁸ Remember that the Lord will give everyone a reward for doing good. Everyone, slave or free, will get a reward for the good things they do.

⁹ Masters, in the same way, be good to your slaves. Don’t say things to scare them. You know that the one who is your Master and their Master is in heaven, and he treats everyone the same.

Wear the Full Armor of God

¹⁰ To end my letter I tell you, be strong in the Lord and in his great power. ¹¹ Wear the full armor of God. Wear God’s armor so that you can fight against the devil’s clever tricks. ¹² Our fight

अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से बंध जाता है और दोनों एक देह हो जाते हैं।”* ³² यह रहस्यपूर्ण सत्य बहुत महत्वपूर्ण है और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह मसीह और कलीसिया पर भी लागू होता है। ³³ सो कुछ भी हो, तुममें से हर एक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे तुम स्वयं अपने आपको करते हो। और एक पत्नी को भी अपने पति का डर मानते हुए उसका आदर करना चाहिए।

बच्चे और माता-पिता

6 हे बालकों, प्रभु में आस्था रखते हुए माता-पिता की आज्ञा का पालन करो क्योंकि यही उचित है। ² अपने माता-पिता का सम्मान कर।”* यह पहली आज्ञा है जो इस प्रतिज्ञा से भी युक्त है, ³ “तेरा भला हो और तू धरती पर चिरायु हो।”*

⁴ और हे पिताओं, तुम भी अपने बालकों को क्रोध मत दिलाओ बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा और निर्देशों को देते हुए उनका पालन-पोषण करो।

सेवक और स्वामी

⁵ हे सेवकों, तुम अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा निष्कपट हृदय से भय और आदर के साथ उसी प्रकार मानो जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो। ⁶ केवल किसी के देखते रहते ही काम मत करो जैसे तुम्हें लोगों के समर्थन की आवश्यकता हो। बल्कि मसीह के सेवक के रूप में काम करो जो अपना मन लगाकर परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। ⁷ उत्साह के साथ एक सेवक के रूप में ऐसे काम करो जैसे मानो तुम लोगों की नहीं प्रभु की सेवा कर रहे हो। ⁸ याद रखो, तुममें से हर एक, चाहे वह सेवक या स्वतन्त्र है यदि कोई अच्छा काम करता है, तो प्रभु से उसका प्रतिफल पायेगा।

⁹ हे स्वामियों, तुम भी अपने सेवकों के साथ वैसा ही व्यवहार करो और उन्हें डराना-धमकाना छोड़ दो। याद रखो, उनका और तुम्हारा स्वामी स्वर्ग में है और वह कोई पक्षपात नहीं करता।

प्रभु का अभेद्य कवच धारण करो

¹⁰ मतलब यह कि प्रभु में स्थित हो कर उसकी असीम शक्ति के साथ अपने आपको शक्तिशाली बनाओ। ¹¹ परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो। ताकि तुम शैतान की योजनाओं के सामने टिक सको। ¹² क्योंकि

5:31 Quote from Gen. 2:24.

6:2 Quote from Ex. 20:12; Deut. 5:16.

6:3 Quote from Ex. 20:12; Deut. 5:16.

5:31 देखें उत्पत्ति 2:24

6:2 देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

6:3 देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

is not against people on earth. We are fighting against the rulers and authorities and the powers of this world's darkness. We are fighting against the spiritual powers of evil in the heavenly places. ¹³ That is why you need to get God's full armor. Then on the day of evil you will be able to stand strong. And when you have finished the whole fight, you will still be standing.

¹⁴ So stand strong with the belt of truth tied around your waist, and on your chest wear the protection of right living. ¹⁵ On your feet wear the Good News of peace to help you stand strong. ¹⁶ And also use the shield of faith with which you can stop all the burning arrows that come from the Evil One. ¹⁷ Accept God's salvation as your helmet. And take the sword of the Spirit—that sword is the teaching of God. ¹⁸ Pray in the Spirit at all times. Pray with all kinds of prayers, and ask for everything you need. To do this you must always be ready. Never give up. Always pray for all of God's people. ¹⁹ Also pray for me—that when I speak, God will give me words so that I can tell the secret truth about the Good News without fear. ²⁰ I have the work of speaking for that Good News, and that is what I am doing now, here in prison. Pray that when I tell people the Good News, I will speak without fear as I should.

Final Greetings

²¹ I am sending you Tychicus, the brother we love. He is a faithful servant of the Lord's work. He will tell you everything that is happening with me. Then you will know how I am and what I am doing. ²² That's why I am sending him—to let you know how we are and to encourage you. ²³ I pray that God the Father and the Lord Jesus Christ will give peace and love with faith to all the brothers and sisters there. ²⁴ God's grace to all of you who love our Lord Jesus Christ with love that never ends.

हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं है, बल्कि शासकों, अधिकारियों इस अन्धकारपूर्ण युग की आकाशी शक्तियों और अम्बर की दुष्टात्मिक शक्तियों के साथ है। ¹³ इसलिए परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो ताकि जब बुरे दिन आयें तो जो कुछ सम्भव है, उसे कर चुकने के बाद तुम दृढ़तापूर्वक अडिग रह सको।

¹⁴⁻¹⁵ सो अपनी कमर पर सत्य का फेंटा कस कर धार्मिकता की झिलम पहन कर तथा पैरों में शांति के सुसमाचार सुनाने की तत्परता के जूते धारण करके तुम लोग अटल खड़े रहो। ¹⁶ इन सब से बड़ी बात यह है कि विश्वास को ढाल के रूप में ले लो। जिसके द्वारा तुम उन सभी जलते तीरों को बुझा सकोगे, जो बदी के द्वारा छोड़े गये हैं। ¹⁷ छुटकारे का शिरस्त्राण पहन लो और परमेश्वर के संदेश रूपी आत्मा की तलवार उठा लो। ¹⁸ हर प्रकार की प्रार्थना और निवेदन सहित आत्मा की सहायता से हर अवसर पर विनती करते रहो। इस लक्ष्य से सभी प्रकार का यत्न करते हुए सावधान रहो। तथा सभी संतों के लिये प्रार्थना करो।

¹⁹ और मेरे लिये भी प्रार्थना करो कि मैं जब भी अपना मुख खोलूँ, मुझे एक सुसंदेश प्राप्त हो ताकि निर्भयता के साथ सुसमाचार के रहस्यपूर्ण सत्य को प्रकट कर सकूँ। ²⁰ इसी के लिए मैं जंजीरों में जकड़े हुए राजदूत के समान सेवा कर रहा हूँ। प्रार्थना करो कि मैं, जिस प्रकार मुझे बोलना चाहिए, उसी प्रकार निर्भयता के साथ सुसमाचार का प्रवचन कर सकूँ।

अंतिम नमस्कार

²¹ तुम भी, मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ, इसे जान जाओ। सो तुखिकुस तुम्हें सब कुछ बता देगा। वह हमारा प्रिय बंधु है और प्रभु में स्थित एक विश्वासपूर्ण सेवक है ²² इसीलिए मैं उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ ताकि तुम मेरे समाचार जान सको और इसलिए भी कि वह तुम्हारे मन को शांति दे सके। ²³ हे भाईयों, तुम सब को परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से विश्वास शांति और प्रेम प्राप्त हो। ²⁴ जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम रखते हैं, उन पर परमेश्वर का अनुग्रह होता है।